

मया 3,744 (act.). 10516. 12119. 16973. 4,1751. 5,5301. 8,2311 (act.). 14,106. 15,667 (act.). HARIV. 9714. R. GORR. 1,60,15. Spr. (II) 4746. KATHAS. 53,187. पात्यमाना मदी तेन — पस्पर्ध त्रिदशावासवासिभिः MĀRK. P. 130,9. °ल-स्या स्पर्धच्छ्रया वनमालया BṛĀG. P. 4,30,7. अस्पर्धिष्ठ BHATT. 15,65. स्पर्धते न च तदुषोः Spr. (II) 6282. नैष केसरिशिशुस्त्वग्जम्ब्वरैः (so ist zu lesen) स्पर्धते (sc. mit dem Elephanten) Z. d. d. m. G. 27,10. सक्तु शक्रेण MBH. 2,485. 5,170 (act.). 10,625 (act.). Spr. (II) 5755. 7371. mit acc. MBH. 1,205. 4986. fg. 4991. राजसूर्यं कतुश्चेष्टं स्पर्धत्येष मत्क्रातुः 3,15292. 5,5110. कंसारावैः u. s. w. पस्पर्ध गङ्गा गन्धर्वान्युलिनेय शिलोच्चयान् 13,1816. 2345 (act.). 14,1822. हेषितैर्वीपुम् HARIV. 4282. न त्वा स्पर्धते द्वयसंपदा KATHAS. 30,68. ohne Ergänzung: स्पर्धमान BṛĀG. P. 5,4,3. स्पर्धति 6,16,35. स्पर्धत् 4,19,11. 10,83,31. — partic. स्पर्धित 1) mit act. Bed.: अस्पर्धितमनस् MBH. 14,1272. — 2) mit pass. Bed.: रावणः स्पर्धितो मया R. 4,62,7. — Vgl. स्पर्द्ध, स्पर्ध्.

— intens. अस्पर्धाः P. 8,3,14. Schol.

— अघि med. wetteifern —, streiten um: अघि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धति धियः सूर्यं न विशः RV. 9,94,1. इन्ने 6,34,1.

— परि s. परिस्पर्धन् fg.

— प्र med. sich den Vorrang streitig machen, wetteifern mit: कृत्तेन HARIV. 6593. mit acc. der Person: सर्वासु विद्यासु तपोविधाने प्रस्पर्धते ज्यं हि गुरुं सुराणाम् R. 7,36,46.

— प्रति dass.: प्रतिस्पर्धते सृष्टिभ्यां सव्यासव्ये नगोदरे BṛĀG. P. 10,12,21. — Vgl. प्रतिस्पर्धा fg.

— वि dass.: तयोर्विस्पर्धतोरवम् MBH. 13,2363. med.: यया सक्तु 1,1088. 5,5845. उत्तरैः कुरुभिः सार्धम् 1,4346. mit acc.: चन्द्रे विस्पर्धमानेन मुखेन R. GORR. 2,8,49. — Vgl. विस्पर्धस्, विस्पर्धा fg.

— सम् med. dass.: संस्पर्धत् परस्परम् MBH. 14,94. — Vgl. संस्पर्धा fg.

स्पर्धनीय (von स्पर्ध्) adj. worum man sich bewirbt, erstrebenswerth: °ञ्च als Erklärung von पित्रवन् Nir. 2,24.

स्पर्धस् (wie eben) vgl. विस्पर्धस्.

स्पर्धा (wie eben) f. Wettlauf Nir. 9,39. Streit um den Vorrang, Wett-eifer: = संकृष्य, संकृष्यण H. 1515. MED. dh. 21. HIR. 208. HALĀ. 4,101. = साम्य und क्रमसमुन्नति MED. als Bed. von क्त्वा und आ-क्त्वा Dhātup. 23,39. P. 4,3,31. VOP. 23,24. — KĀM. NĪRIS. 17,47. RĀGA-TAR. 3,249. ŚIN. D. 90. स्पर्धया im Wettlauf, um die Wette MBH. 1,1221. 7007. 4,764. R. 4,37,5 (38,7 GORR.). 40,4 (41,4 GORR.). RĀGA-TAR. 1,290. HALĀ. 4,99. बलीयसा Spr. (II) 316. भूपतिरात्मनः स्पर्धा चतमे न स कस्य-चित् । आत्मनस्तु बुधेः स्पर्धा शुद्धधीर्वह्ममन्यत ॥ RĀGA-TAR. 4,489. 5,285. स्पर्धया गुणविस्तरैः R. 7,101,12. विरुतं कुर्वणाः स्पर्धया सक्तु मयूरैः Spr. (II) 975. वसिष्ठस्पर्धया im Streit um den Vorrang mit R. GORR. 1,58,8. देवदुन्दुभिनिर्द्वादस्पर्धयेव KATHAS. 34,111. 38,1. 72,279. Spr. (II) 2113. RĀGA-TAR. 1,123. 127. 3,11. लक्ष्मीलवस्पर्धया so v. a. aus Verlangen nach Spr. (II) 2391. v. 1. स्पर्धा वि-धा wetteifern: असमैः RĀGA-TAR. 3,284. कर् द. dass.: स्पर्धा तपःकृता तीव्रा चक्रतुस्तौ MBH. 9,2366. PĀN-ĀR. 4,3,2. सौभाग्यकृतस्पर्धैः परस्परम् RĀGA-TAR. 6,164. पारिजातकुसु-मस्पर्धाकरी मञ्जरी Verz. d. Oxf. H. 213, b, No. 507. — Vgl. सप्त°.

स्पर्धिन् (wie eben) adj. um den Vorrang streitend, wetteifernd MBH. 5,4614. 7,3845. 14,96 (अति°). HARIV. 9133. R. 4,45,16 (46,16 GORR.).

अन्योन्यस्पर्धिनौ MBH. 1,3189. 3,16448. 7,149. दिनकरूप° MEGH. ed. St. V. तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु RAGH. 13,13. 16,62. Spr. (II) 7186. Z. d. d. m. G. 27,78. VARĀH. BRH. S. 19,14. KATHAS. 23,211. 54,51. RĀGA-TAR. 4,10. ŚIN. D. 41,14. PĀNĀT. ed. orn. 3,5. Verz. d. Oxf. H. 187, b, No. 428. Z. 10. शृङ्गारोत्तरसत्प्रनेपवचनैराचार्यगोवर्धनस्पर्धि कविः Gīt. 1,4.

स्पर्ध्य (wie eben) adj. (worum man streiten könnte) begehrenswerth, kostbar: आस्तरण MBH. 1,1875. 7943. 2,2081. 3,16925. R. GORR. 1,3,68. 2,82,10. अजिन MBH. 5,3380.

स्पर्श, स्पर्शाति (संस्पर्शने) Dhātup. 28,128. पस्पर्श, पस्पर्शत्: अस्पृक्षत् अस्पृक्षत् und अस्पृक्षत् P. 3,1,44. VĀRTI. SIDDH. K. 130, a, s. VOP. 8,76. fg. 13,4. स्पृक्षति (vgl. KĀR. 5 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10), स्पृ-ष्टुम्, स्पृष्ट्वा. Hier und da auch med. des Metrums wegen. Der Anlaut geht nie in ष über AV. PĀR. 2,102. P. 8,3,110. 1) berühren (acc.), rühren an (loc.), streicheln: द्विवि RV. 4,36,8. द्विः सानु 10,70,5. 6,8,2. ग्रामग्रैणास्पृक्षत्: VS. 6,2. 28,18. 20. उशतीहृशतै स्पर्शति RV. 4,62,11. यत्रास्पृक्षत्तन्वः AV. 6,124,2. TBR. 4,5,2. स्वर्गं लोकम् CAT. BR. 12,2,9,11. 14,7,1,29. ते ह्येतन्नेदिष्टं पस्पर्शः KANOP. 27. fg. अन्योन्यं स्पृक्षतः Schol. zu P. 3,1,87. VĀRTI. 3. न स्पृक्षेत्तत् (शिरः) M. 4,82. fg. 143. fg. 5,85. 87. 103. स्पृक्षति बिन्द्वो पदौ ये 142. 7,219. 8,358. 11,148. MBH. 3,1780. 2215. यावदस्ति मनुष्यस्य गङ्गायाः स्पृक्षते जलम् 8236. 12047. मा स्पृक्ष्यात् 15688. 4,278 (mit der ed. Bomb. स्पृक्षति st. प्रक्षति zu lesen). 5,3556 (स्पृक्ष absol.). 6,5658. 13,7618. HARIV. 14777. R. 1,34,53. 2,64,28. 59. 3,46,12. 53,47. 4,16,34. 5,51,17. Suçr. 1,30,6 (einen Kranken). ÇĀK. 22. 147. रजःकणैः स्पृक्षद्भिर्गात्रम् RAGH. 1,85. 2,32. Spr. (II) 1810. अस्पृक्षन्नेव वित्तानि 1892. 2056 (med.). 3816. 6810. 7247. स्पृ-शति शर्वतीक्ष्णाः स्तोत्रमसर्विशति च 7248. स्पृक्षन्नि गन्ता कृति 7249. VARĀH. BRH. S. 43,16. 44,20. 50,6. 10. 51,34. 70,16. ein Weib KATHAS. 34,9. Verz. d. Oxf. H. 59, b, 1 v. u. (med.). मामकाङ्गानि मा स्पृक्षोः R. 6,42,6 (41,7 GORR.). MĀRK. 131,5. MĀRK. P. 24,38. 61,61. BṛĀG. P. 1,13,16 (तो ष° डुरात्मना zu schreiben). 10,83,24 (पस्पर्शे med.). वातेन स्पृक्ष्यमाना MBH. 2,2346. KUMĀRAS. 7,31. अन्योन्यं कृत्स्नं स्पृक्षतः VIKR. 11,14. स्पृक्षेयं तेन सत्येन पादावेतौ MBH. 3,2981. मार्शरी भूमिं स्पृष्ट्वा कर्णौ स्पृक्षति bei einer Betheuerung HIR. 19,20. 122,5. पाणिना, करेण, हस्तेन M. 4,142. MBH. 3,1778. 5,7006. 11,196. पाणीन्यापिभिः R. 1,73,32. 2,42,11. 33. 52,12. 3,72,29. KUMĀRAS. 3,22. Spr. (II) 3282. KATHAS. 36,40. MĀRK. P. 74,17 (med.). पादेनात्रम् M. 3,229. न चापि राघ-वादन्त्यं पादेनापि नरं स्पृक्षे R. 3,51,29. 41. चरणेनापि वातेन न स्पृक्षेयं क-दा च न (रावणम्) 5,26,27. मुखेन, उरसा LĪTJ. 3,12,8. वक्त्रेण दक्षिणमा-त्मपाशम् ein Pferd VARĀH. BRH. S. 93,13. शिरोभिश्चरणी HARIV. 14085. दत्तैः HIR. 21,21. सूच्या लोचने R. 3,53,50. कम्बुना बालं कपोले BṛĀG. P. 4,9,4. सर्वगात्रेषु तम् MBH. 15,134. प्रियं करे BṛĀG. P. 2,9,18. करे ohne acc. 10,84,60. पादयोः 4,20,18. अङ्गेषु पाणिना RĀGA-TAR. 3,410. partic. स्पृष्ट् berührt: उरसास्पृष्टम् adv. KĀTJ. ÇR. 17,4,10. M. 2,62. 4,207. 8,358. R. 1,9,39. शिरैः 5,26,40. MEGH. 106. RAGH. 1,42. ÇĀK. 58. 178. Spr. (II) 5173. RĀGA-TAR. 3,369. PRAB. 11,10. BṛĀG. P. 4,15,10. 6,11,16. 7,1,42. कर्पूरः पावकस्पृष्टः Spr. (II) 7291. चरणस्पृष्टा भुक्तगाः LA. (III) 89,22. करेण RV. PĀR. 13,8. स्पृष्टे स्पर्शानां करणम् AV. PĀR. 1,29. इष-